वर्तमान भारत के राजनैतिक परिदृश्य में रामराज्य की प्रासंगिकता

डॉ. भावना यादव
सहायक प्राध्यापक - राजनीति विज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आज हम फिर विकास के नये मॉडल की तलाश में है ऐसा मॉडल जो समाज के सबसे आखिरी व्यक्ति को विकास की मुख्य धारा में लाने वाला हो और वह मॉडल सम्भवतः राम राज्य है। आज मसला चाहे पर्यावरण संकट, गरीबी, शिक्षा, ग्राम स्वराज, जातीय संघर्ष अथवा समाज में बढ़ते हिंसक वैमन्सय का हो प्रत्येक मसले पर श्री राम के विचार और जीवन प्रासंगिक है। श्रीराम का जीवन और रामराज्य मानवता की बहुत सी समस्याओं का हल उपस्थित करता है। आज भूमण्डलीकरण एवं पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के दौर में रामराज्य तथा राम के मूल्यों तथा विचारों की व्यावहारिक धरातल पर पुर्नव्याख्या की आवश्यकता है।

प्राचीन काल से विशेषकर 'वाल्मीकि रामायण' से रामकथा का अनुरागमयी ''भक्ति भावना की दृष्टि से आख्यान, अगस्त्य संहिता, राघवीय संहिता, रामपूर्व तापनीय उपनिषद रामोत्तर तापनीय उपनिषद, रामरहस्योपनिषद्, प्रभृति धार्मिक ग्रंथों में उपलब्ध होता है। आध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, अद्भुत रामायण, भुशुण्डि रामायण, हनुमत संहिता, राघवलोल्लास आदि ग्रंथों में भी रामकथा की धार्मिक एवं दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत की गयी है, विष्णु-पुराण, वायुपुराण, भागवत पुराण और कूर्म पुराण में रामकथा सर्वाधिक वैविध्य सम्पन्न हैं वाराह, अग्नि, लिंग, वामन, बाह्य, गरूड, स्कंद, पद्य, ब्रह्मवैवर्त आदि पुराणों में भी रामकथा के अनेक प्रसंग दृष्टिगत होते हैं।[1] इसके अलावा बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में भी मिलती है। इतना ही नहीं अब तक विश्व की 76 भाषाओं और 25 लिपियों में रामचरितमानस का अनुवाद हो चुका है। जब हम रामराज्य की बात करते हैं तो विभिन्न ग्रंथों में यह केवल राज्य और राजनीति तक सीमित नहीं वरन् इसमें एक साथ नीति, समाज, दर्शन, राजनीति और साहित्य का समावेश है। विभिन्न भाषाओं और साहित्यकारों ने अपनी रचना में राम के जीवन द्वारा मनुष्य की निष्ठा, आत्म सम्मान, साहस, शौर्य, संगठन और शक्ति के इतिहास का सृजन किया। आज बहुत लोगों को राम राज्य का मार्ग असंभव भले ही लगे लेकिन संसार को उन्हीं के रास्ते में संभावना की रोशनी मिलेगी। रामराज्य समाज में श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों की रक्षा हेतु तैयार किया गया कथानक है। समाज में भले लोगों की विजय के लिये प्रयास करना और अन्याय और अत्याचार को नाश करना राम का उद्देश्य है।

श्री राम के विषय में एन.आर. नवलेकर ने लिखा है कि ''जब मैंने वाल्मीकि द्वारा वर्णित राम के विषय में विचार किया तो मुझे राम भारत के सबसे बड़े राजनीतिक और सैन्य शास्त्र के प्रतिभाशाली ज्ञात जान पड़े जिन्होंने अत्याधिक आशाहीन परिस्थितियों में काम करके आर्य जाति को दासता के निम्नतर स्तर से स्वतंत्रता की गौरवपूर्ण ऊँचाई तक उठा दिया।[2] यही कारण है युग बीते पर श्री राम और उनकी ऐतिहासिकता आज भी जीवंत है। क्षेत्र, विषय कोई भी हो उसके हर आयाम में हम राम को पाते हैं।

महर्षि वाल्मीकि और तुलसीदास ने श्री राम के नैतिक आदर्श से परिपूर्ण दिव्य जीवन चरित के माध्यम से युगों पूर्व आदर्श भारतीय समाज के धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक विविध पक्षों को स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त करते हुए तत्कालीन समाज की तस्वीर दिखाई है। रामायण में जीवन से जुड़े सभी महत्वपूर्ण पहलुओं यथा दान, दया, धर्म, कर्म, सफलता, शांति, बुद्धि, ज्ञान, विद्या, भोग, योग, शक्ति और अहंकार के साथ जन्म और मृत्यु जैसी घटनाओं की जितनी सटीक मीमांसा की गई है वह अन्यत्र दुर्लभ है। बात चाहे श्री राम के बचपन में उनकी शिक्षा, बुद्धि, विद्या ज्ञान की हो जिस हेतु गुरूकुल शिक्षा के महत्व को वर्णित कर वशिष्ठ और विश्वामित्र जैसे गुरूओं के निर्देशन में जीवन के विभिन्न पहलुओं के साथ अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा में पारंगत हुआ जा सकता है।

"श्री राम के अवतार का प्रयोजन सद् प्रवृत्तियों का पोषण और दुष्प्रवृत्तियों का विनाश है - "विप्र धेनु सुर संतहित, लीन्ह मनुज अवतार।"[3] श्रीराम पिता की आज्ञा से अयोध्या के कार्य संभालते हैं और अयोध्यावासियों के सुख संपादन हेतु कार्यों को करते हैं - "जेहि विधि सुखी होंहि पुरलोगा। करहिं कृपा निधि सोई संजोगा।"[4]

युवा अवस्था के राम दशरथ की वचनबद्धता को निभाते हुए साम्राज्य छोड़ दृढ़ इच्छा शक्ति को प्रदर्शित कर चौदह वर्ष के वनवास हेतु प्रस्थान करते हैं। श्रीराम कैकेयी द्वारा दिये वनवास को भी "सुन जननी सोइ सुत बड़भागी जो पितु मातु वचन अनुरागी।"[5] कहकर प्रसन्नतापूर्वक स्वीकारते हैं। वन में विभिन्न जाति जनजातियों समुदायों, ऋषियों, वनस्पतियों, पर्यावरण और वन्य प्राणियों का समान भाव से सम्मान कर सभी के हितों के संवर्द्धन का प्रयास करते हैं। फलस्वरूप विभिन्न जनजातियों और वन्य जीवों का कुशल संगठन तैयार होता है जो उनकी कुशल प्रबंधन क्षमता का परिचायक है "यह सुधि कोल किरातन्ह पाइ। हरषे जनु नव निधि घर आई।"[6]

राम अपने व्यवहार में कर्म प्रधानता आध्यात्मिकता चिन्तन की स्वतंत्रता, समूह की आवश्यकता, ग्रहणशीलता, विश्व कल्याण की भावना, सहिष्णुता, उदारता और स्थितियों परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तनशीलता को प्रदर्शित करते हैं। वास्तव में उनके व्यवहार और आचरण के कारण ही संकीर्ण वन चर सभ्यता की धारा से जुड़े। साथ ही वे आदिवासियों, दलितों, महिलाओं के पोषक और संरक्षक है शबरी, सुग्रीव, केवट इसी के उदाहरण है। इतना ही नहीं श्री राम आदर्श शत्रु हैं, दूत के रूप में अंगद को लंका भेजते समय उनका स्पष्ट मत है "काजू हमार तासु हित होई। रिपु सन करेहतु बतकही सोई।"[7]

भारतीय संस्कृति की विरासत का विस्तार है राम कथा। भौगोलिक सीमाओं के परे रामायण कथा का विस्तार लगभग आधे विश्व में है। यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि रामकथा की आस्था को प्रयासों से या बलपूर्वक दुनिया में नहीं फैलाया गया वरन् राम की नैतिक शक्ति ने हर जगह मनुष्य के दिल में स्थान बनाया है। बात चाहे सीता स्वयंवर में स्त्री को मिले अधिकार की हो या कैकई द्वारा युद्ध में राजा दशरथ के प्राणों की रक्षा या मन्दोदरी और उर्मिला की संवेदनशीलता की, शबरी के झूठे बेर और सूर्पनखा की अनुचित लालसा की। हर स्त्री चरित्र ने उस समय के समाज की अभिव्यक्ति की और राम के आदर्शमय आचरण ने हर पात्र से यथोचित व्यवहार किया। जिसकी आज भी आवश्यकता है।

रामायण कालीन संस्कृति सामुदायिकता को प्रश्रय देती उच्चतम मूल्यों पर आधारित थी। जहाँ प्रथाओं, भावनाओं, मनोवृत्तियों, आचरण की शुद्धता के साथ आत्मिक उत्थान हेतु पर्याप्त अवसर और वातावरण था। श्री राम द्वारा पिता के वचनपूर्ति हेतु गृह त्याग तो भाई लक्ष्मण द्वारा हर कदम पर सहयोग हेतु स्वतः त्याग। तो दूसरी ओर भरत द्वारा मिले राज्य को ठुकराकर केवल सेवक की भाँति राज्य का संचालन सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने वाले सुग्रीव, विभीषण का असत्य के युद्ध में परिवार के विपक्ष में होना और अपनी आत्मिक शक्ति से हनुमान द्वारा समुद्र पार करना उच्चतम मूल्यों के श्रेष्ठ उदाहरण है।

रामायण में वर्णित व्यवहार पुत्र का पिता के प्रति, भाई का भाई के प्रति, पत्नि का पति के प्रति, पति का पत्नि के प्रति के, राजा का सेवक के प्रति, सेवक का राजा के प्रति तथा राजा का प्रजा, शत्रु, युद्ध के प्रति समस्त व्यवहारों में नैतिकता और धर्म की प्रधानता है। यही धर्म प्रधान राज्य राम राज्य के रूप में स्थापित हुआ। डॉ. रामकुमार वर्मा का कथन है कि ''तुलसीदास ने राजनीति के सिद्धांतों का निरूपण अधिकतर मानस में किया है। पहले तो उन्होंने समकालीन परिस्थितियों का चित्रण कर कलियुग के प्रभाव से राजनीति की दुरावस्था का रूप खड़ा किया है बाद में रामराज्य वर्णन में राजनीति के आदर्श की ओर संकेत किया है।''[8]

वास्तव में नैतिकता, धर्म परायणता, सहिष्णुता, ईमानदारी, संवेदनशीलता, सहनशीलता और विश्व बंधुत्व के भाव का लोप हो रहा है और समाज व राज्य रावणों (आसूरी वृत्ति) से भरे दिखाई दे रहे हैं। रामायण में वर्णित राज्य और राजा के रूप में राम का चरित्रांकन आशा व आस्था का संचार करता है जो आज देश के समग्र विकास हेतु आवश्यक है। जब हम रामराज्य की बात करते हैं तो उस काल में लोकतन्त्र, राजतन्त्र में विद्यमान था। राजा सर्वोच्च सत्ता होते हुये भी मंत्री, अमात्य, पुरोहित, गुरू और सभासदों की सहमति से निर्णय लेता था। इसके अनेक उदाहरण यथा राम का राज्याभिषेक, राम द्वारा अयोध्या पर शासन में सभी का परामर्श हमें दिखाई देता है।

''रामायण काल में राजा निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी नहीं था। वह लोकतन्त्रिय अवधारणाओं के अनुसार पुरोहित, अमात्य, नीतिज्ञों, सभासदों के परामर्श से राज्य कार्य का संचालन करता था।''[9] साथ ही प्राचीन भारत में धर्म ही समाज की विधि है और धर्म से ही समाज शासित और संचालित होता था, स्वयं राजा भी धर्म से नियन्त्रित और शासित था। ''राजा और प्रजा विधि से शासित थे। राजा धर्म के रक्षक और प्रजापालक थे। राजधर्म निष्पक्ष और पारदर्शी था।''[10] उस समय भी राजा के रूप में दशरथ, भरत और श्रीराम ने अनेकों विपत्तियों, विघ्नों, समस्याओं और आपदाओं का सामना किया परन्तु इसके बाद भी सत्य, सहनशीलता, दया, उत्साह और आशा का मार्ग नहीं छोड़ा। कर्म के क्षेत्र में जीत और हार का उतना महत्व नहीं जितना पुरूषार्थ का है। राम राज्य में राम का उद्देश्ययुक्त आशावान संकल्प तथा साधन साध्य की एकरूपता ने ही बुराई पर अच्छाई की शक्ति की विजय का मार्ग प्रशस्त किया।

रामराज्य और रामकथा तथा उसके प्रेरक प्रसंगों का अनंत विस्तार है। एक शोध पत्र में उसे समाहित करना संभव नहीं है। परन्तु प्रयास सिर्फ इतना है कि जो युगों पूर्व हमारा भाग था उसे विस्मृत न करें वरन् धारण करें आज नित प्रति बदलते समाज में रामाराज्य की प्रासंगिकता हर क्षेत्र में है आवश्यकता सिर्फ उसे अपनाने की है।

ISSN 2395-051X

सन्दर्भ

1. डॉ. नागेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 180
2. एन. आर. नवेलकर - ए. व्यू एप्रोच टू रामायण, पृ. 19
3. रामचरित मानस, ग्रीता प्रेस, बालकाण्ड, पृ. 192
4. वही, पृ. 205
5. वही, अयोध्या काण्ड, पृ. 250
6. वही, पृ. 135
7. वही, लंकाकाण्ड, पृ. 17
8. डॉ. रामकुमार वर्मा- हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ. 436
9. वाल्मीकि रामायण, पृ. 59
10. वाल्मीकि रामायण, पृ. 128